**अपील**

**परिचय-**

तिरुवेल्लरै मेलत्तिरुमालिगै अम्माळ् श्री उ. वे. सौम्यनारायणाचार्य स्वामी जी के निर्देशन में परमनडि ट्रस्ट के नाम से श्री वैष्णव कैङ्कर्य हेतु एक ट्रस्ट गठित किया गया है।

**ट्रस्ट के प्रमुख उद्देश्य निम्नानुसार हैं-**

* संप्रदाय के लुप्त हो रहे ग्रंथों का पुनः प्रकाशन, अप्रकाशित ग्रंथों का प्रकाशन।
* अपने पूरे जीवन को शास्त्र एवं संप्रदाय के ग्रंथों के अध्ययन एवं अध्यापन में समर्पित करने के इच्छुक प्रतिभावान् व्यक्तियों को प्रोत्साहित करना एवं ऐसे विद्वानों को संबल प्रदान करना।
* आचार्यों के संदेशों को लुप्त होने से बचा कर उनको भावी पीढ़ी तक पहुंचाना।

शास्त्र एवं संप्रदाय ग्रन्थों के पूर्णकालिक अध्ययन हेतु इच्छुक छात्र भी आर्थिक अस्थिरता के कारण इस क्षेत्र में आगे नहीं बढ पाते हैं। अतः यह ट्रस्ट उन छात्र एवं विद्वानों को शास्त्र परम्परा की रक्षा हेतु प्रोत्साहित करेगा, जिससे ज्ञान की इस परम्परा का लाभ आने वाले सन्ततियों को भी मिले।

**प्रयोजन-**

**शास्त्र अध्ययन का महत्व-**

वेद के अध्ययन एवं वेदार्थ के निरंतर चिंतन को गीता जी में कर्मयोग के रूप में माना गया है।

**ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः।**

**श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः।।3.31।।**

इस श्लोक में कर्मयोग निष्ठों की, कर्मयोग में श्रद्धा रखने वालों की एवं उसका अनुमोदन करने वालों की भी प्रशंसा की गई है। इस ज्ञान यज्ञ में सहयोग मात्र से भी सर्व कलुषों को नष्ट कर जीव भगवद्धाम को प्राप्त करता है।

**श्रीभाष्य की महिमा-**

एक बार श्री भाष्य के पाठ, परायण एवं अध्ययन को अस्सी अतिकृच्छ्र अनुष्ठान के तुल्य बताया गया है जिसका उल्लेख श्रुति प्रकाशिका में किया गया है। विभिन्न पापों के प्रायश्चित्त हेतु शास्त्रों में कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र आदि अनेक प्रायश्चित्तों का विधान है जिनका अनुष्ठान 12 से 15 दिनों तक का होता है। इससे श्रीभाष्य की पावनता को हम समझ सकते हैं। स्वयं श्रीभाष्यकार रामानुज स्वामी जी ने कहा है कि श्रीभाष्य के अक्षर वेदसारभूत गायत्री से उद्धृत हैं और अमृत के तुल्य श्रीभाष्यार्थ संसार के तापों को शमन कर भगवत्प्राप्ति कराता है।

**दिव्यप्रबन्धों की महनीयता-**

भगवान् ने समस्त वेद पुराण इतिहास के सार को मुमुक्षु जन के उपकार के लिए कलियुग के आरंभ में आलवारों की सूक्तियों के द्वारा प्रकट करवाया। इन सूक्तियों द्वारा प्रवाहित ज्ञानधारा के संबंध मात्र से मनुष्य भगवत्प्रेम को प्राप्त करता है। इस बात की पुष्टि श्रीमद्भागवत के ये श्लोक कर रहे हैं।

**कलौ खलु भविष्यन्ति नारायणपरायणाः।**

**क्वचित् क्वचिन्महाभाग द्रविडेषु च भूरिशः ।**

**ताम्रपर्णी नदी यत्र कृतमाला पयस्विनी ॥**

**कावेरी च महापुण्या प्रतीची च महानदी ।**

**ये पिबन्ति जलं तासां मनुजा मनुजेश्वर ।**

**प्रायो भक्ता भगवति वासुदेवेऽमलाशयाः ॥**

इन दिव्य प्रबन्धों के रहस्य को समझने के लिए पूर्वाचार्यों ने अनेक व्याख्याएँ लिखी है। यदि सनातन वैदिक धर्म का प्राण भगवद्भक्ति है तो ये व्याख्याएँ उस प्राण की संजीवनी हैं। इन व्याख्याओं के साथ दिव्य प्रबन्ध के श्रवण मनन को समस्त पुण्य नदी में स्नान करने के तुल्य बताया गया है । अपनी गुरु के चरण सेवा, भूदान, पितृतर्पण, मन्त्रपाठ, तपस्या आदि से प्राप्य भगवदनुग्रह दिव्यप्रबन्धों के श्रवण मात्र से प्राप्त होते हैं ।

इस सद्ग्रन्थों के अध्ययन एवं उस के अनुरूप अनुष्ठान के नहीं होने से श्रीवैष्णवजन भी सांसारिक दुःखों एवं तापों से सन्त्रस्त हैं । श्रीवैष्णव होने के नाते इन ग्रन्थों एवं इनके रहस्यार्थों पर हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है । परन्तु इस ग्रन्थों को दूर, इन की महत्ता को भी हम में से ही बहुत कम लोग समझते हैं । गुरुपरम्परा से अध्ययन कर शास्त्रों के निष्कर्ष को समझने वाले आचार्य यदि न बतावें तो इन अर्थों को सुन पाना या समझ पाना असम्भव है । परन्तु आजीविका अर्जन की अनिवार्यता से इस ओर प्रवृत्त छात्रों की निष्ठा और लगन कम हो जाती है । अतः इन को आजीविका अर्जन के भय से मुक्त रखकर शास्त्र अध्ययन में प्रवृत्त करवाने हेतु यह पहल किया गया है ।

श्रीवैष्णव सम्प्रदाय में श्रीविष्णुचित्त नामक आचार्य हुए जो श्रीरामानुजाचार्य के साक्षात् शिष्य थे । उन्होंने श्रीकुरुकेश स्वामी से सम्प्रदाय के रहस्यों को प्राप्त कर श्रीविष्णुपुराण पर अद्वितीय टीका लिखी जो विष्णुचित्तीयम् नाम से प्रख्यात है । उन्हीं आचार्य की तिरुमालि जो तिरुवेल्लरै मेल्लतिरुमालिगै नाम से प्रसिद्ध है । वर्तमान में तिरुमालि से निम्नाङ्कित कैङ्कर्य हो रहे हैं-

* देश के प्रमुख सम्प्रदाय विद्वानों द्वारा श्रीभाष्य के कठिन स्थलों पर व्याख्यान एवं चर्चा हेतु तिरुवेल्लरै दिव्यदेश में प्रतिवर्ष भव्य श्रीभाष्य सभा का आयोजन ।
* वेदान्त, दिव्यप्रबन्ध एवं रहस्य ग्रन्थों पर प्रतिमास विद्वत्सभा एवं छात्रसम्मेलन का आयोजन ।
* प्रतिवर्ष श्रीभाष्य, भगवद्विषय (सहस्रगीति की व्याख्या) तथा अन्य सम्प्रदाय ग्रन्थों का श्रीरङ्गम् के आचार्य सन्निधि में मूल पारायण का आयोजन ।
* नित्य वेद पारायण, प्राचीन ग्रन्थ पाण्डुलिपियों का संग्रहण एवं उनकी स्केनिंग व प्रकाशन ।
* अप्रकाशित ग्रन्थों के सही पाठ निर्धारण हेतु इन का समीक्षात्मक सम्पादन तथा प्रकाशित ग्रन्थों के सन्दिग्ध स्थलों के निश्चित पाठ निर्धारण ।
* Aayar Thevu नामक Mobile App द्वारा निश्चित अन्तराल के बीच सम्प्रदाय के अर्थों का प्रवचन । वर्तमान में ये प्रवचन तमिल में ही उपलब्ध है । भविष्य में हिन्दी एवं अंग्रेजी में उपलब्ध कराने की योजना है ।

**भविष्य की योजनाएँ**-

* श्रीमठों एवं मन्दीरों में नियमित वेद पारायण का आयोजन ।
* संस्कृत एवं सम्प्रदाय शिक्षण हेतु Part-Time कोर्स का प्रारम्भ ।
* शास्त्र, श्रीभाष्य, दिव्यप्रबन्धों के अध्ययन हेतु समर्पित प्रतिभाशाली छात्रों को मासिक छात्रवृत्ति ।

उपर्युक्त योजनाओं के सफल सञ्चालन एवं सम्प्रदाय की ज्ञान परम्परा के संरक्षण हेतु समस्त आस्तिक जन, विशेषकर श्रीवैष्णवाभिमानी जनता के सहयोग की अपेक्षा है ।

जो इस कैङ्कर्य में किञ्चित्कार करने के इच्छुक हैं वे [www.paramanadi.org/donations](http://www.paramanadi.org/donations) इस वेबसाइट पर जा सकते हैं ।

यथाशक्ति सहयोग कर दूसरों को भी प्रेरित करने की प्रार्थना के साथ अनेक मङ्गलाशासन।

इस ट्रष्ट में दान करने के इच्छुक महानुभव हमारे किसी भी ट्रष्टी से चेक अथवा नगद प्रदान कर रसिद प्राप्त कर सकते हैं । ऑनलइन पेमेंट से सम्बन्धित विवरण hhtps://www. paramanadi.org/ donations लिखित वेबसाइट पर प्राप्त कर सकते हैं । अधिक जानकारी हेतु ट्रष्ट के कार्यकारी सचिव से निम्न लिखित मोबाइल नम्बर अथवा इमेल पर सम्पर्क कर सकते हैं ।

मो.नं- 8838850650 ईमेल-sec.paramanadi@gmail.com